मुट्ठियाँ क्या हैं? (मरकुस 14:65)

प्रश्न:

यीशु ने किस तरह की पिटाई झेली—विशेषकर वह “मुट्ठियाँ” जो शास्त्र में बताई गई हैं?

उत्तर:

मरकुस 14:65
“फिर कुछ लोगों ने उस पर थूकना शुरू किया; उन्होंने उसकी
आंखों पर पट्टी बांधी, उसे मुट्ठियों से मारा और कहा, ‘भविष्यवाणी करो!’ और रक्षक उसे पकड़कर पीटने लगे।”

यह दृश्य दर्शाता है कि यीशु ने अपने अन्यायपूर्ण मुकदमे के दौरान शारीरिक और मौखिक अत्याचार झेले। हाँ—उस पर मुक्के मारे गए, उस पर थूक गया, उसका उपहास किया गया और उसे पीटा गया। यह केवल प्रतीकात्मक पीड़ा नहीं थी, बल्कि वास्तविक, क्रूर हमले थे, जिन्हें परमेश्वर के पुत्र ने सहन किया।

अधिकांश लोग जानते हैं कि यीशु को रोमन सैनिकों द्वारा कड़ी तरह से फाँसियाँ दी गईं (योहन 19:1):

“फिर पिलातुस ने यीशु को पकड़कर उस पर चाबुक चलवाया।”

और यातना के दौरान उसे फिर से थूका गया:

मरकुस 15:19
“और बार-बार उसने उस पर लकड़ी से प्रहार किया और उस पर थूक
दिया। घुटनों के बल गिरकर उसका उपहास करते रहे।”

लेकिन अक्सर यह तथ्य नजरअंदाज किया जाता है कि यीशु के मुँह पर लगातार मुक्के मारे गए, और यह इतनी गंभीर पिटाई थी कि उसका चेहरा पहचान से बाहर हो गया।

इस पुराने नियम की भविष्यवाणी यशायाह 52:13–14 में दी गई है:

“देखो, मेरा सेवक बुद्धिमानी से कार्य करेगा; वह उठाया
जाएगा, ऊँचा किया जाएगा और बहुत महिमामय होगा।
कई लोग उसे देखकर भयभीत होंगे—उसका रूप किसी भी मानव से भिन्न और उसका स्वरूप मानव जैसी पहचान से बाहर हो गया।”

यीशु का यह दुख व्यर्थ नहीं था। उसने इसे पापी मानवता के स्थान पर सहन किया। उसने हमारी सजा अपने ऊपर ली, और इस प्रकार दुख भोगने वाले सेवक की भविष्यवाणी (यशायाह 53) पूरी की:

“परन्तु वह हमारे अपराधों के कारण घायल हुआ, हमारे अधर्मों
के कारण कुचला गया; जो शांति हमें मिली, उसका दंड उसी पर
पड़ा, और उसके घावों से हम चंगे हुए।”
(यशायाह 53:5)

इस क्रूर पिटाई का उद्देश्य परमेश्वर की मुक्ति योजना का हिस्सा था। यह हमें पाप की गंभीरता और परमेश्वर के असीम प्रेम की याद दिलाती है, जिसने अपने पुत्र को नहीं बख्शा (रोमियों 8:32), बल्कि हमें बचाने के लिए उसे पीड़ा में दिया।

अक्सर फिल्मों या कला में यीशु के कष्ट को नरम दिखाया जाता है। इससे हम सोच सकते हैं कि क्रूस पर मृत्यु कुछ हल्की घटना थी। लेकिन शैतान चाहता है कि हम क्रूस की महिमा को कम आंकें, और इसे केवल प्रतीकात्मक या सामान्य समझें।

बाइबल स्पष्ट रूप से कहती है कि हमें बहुत बड़ी कीमत चुकाकर मुक्ति मिली:

1 कुरिन्थियों 6:20
“क्योंकि तुम मूल्य पर खरीदे गए हो; इसलिए अपने शरीर से परमेश्वर की महिमा करो।”

क्रूस की उपेक्षा करने का खतरा:
मसीह के बलिदान को हल्के में लेना खतरनाक है। यह केवल अपमानजनक नहीं—बल्कि आध्यात्मिक रूप से विनाशकारी है।

इब्रानियों 10:29
“तो तुम सोचो कि उस व्यक्ति को कितना गंभीर दंड मिलना चाहिए जिसने परमेश्वर के पुत्र को ठेस पहुँचाई, जिसने अपने
पवित्रता देने वाले संधि के रक्त का अपमान किया, और जिसने
कृपा की आत्मा का अपमान किया?”

यीशु का कष्ट हमारे दिल को झकझोर देना चाहिए। यह हमें पश्चाताप की ओर खींचे, और हमें कृतज्ञता और आज्ञाकारिता के साथ जीने के लिए प्रेरित करे, न कि उदासीनता में।

प्रतिक्रिया देने का आह्वान:

यदि तुमने अभी तक अपना जीवन मसीह को नहीं समर्पित किया है, तो विलंब मत करो। यह केवल न्याय से बचने की बात नहीं—यह अनंत जीवन को स्वीकार करने की बात है, जो यीशु के माध्यम से मुफ्त में दिया गया है।

योहन 3:16
“क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न
हो, परन्तु अनंत जीवन पाए।”

सोचो, वह वरदान खोना—न केवल आग की झील के कारण, बल्कि केवल इसलिए कि तुम हमेशा के लिए परमेश्वर से कट गए। क्या यह इतना बड़ा नुकसान नहीं है कि इसे जोखिम में डाला जाए?

प्रकाशितवाक्य 20:15
“और जिसकी पुस्तक जीवन में नाम लिखा नहीं पाया गया, उसे आग
की झील में फेंक दिया गया।”

यीशु ने मरकर और फिर उठकर हमें अब नया जीवन और अनंत जीवन दिया। उसके वरदान को स्वीकार करो। इंतजार मत करो।

□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ ✝

Share on:
WhatsApp

Print this post